राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) **अवश्यं युष्मदीयां, कामनां प्रपूरयितुं प्रयतिष्ये ।**
प्रचारयत यूयमेव, पुनरिमां राष्ट्रोपनिषदं स्वप्रियाम् ।।98।।

अवश्य मैं तुम्हारी कामना को प्रपूर्ण करने के लिये प्रयत्न करूँगा। तुम ही फिर अपनी प्रिय इस राष्ट्रोपनिषद् को प्रचारित करना ।

I will surely give my best to fulfil your wishes. Then you should spread this Rashtropanishad to your dear ones.

इत्याश्वासितास्ते तु, निवृत्ताः स्वं स्वं गृहं मां प्रणम्य ।
अहमपि राष्ट्रोपनिषदमिमां विरचय्य राष्ट्रायार्पयामि ।।99।।

इस प्रकार मेरे द्वारा आश्वासित किये गये वे मेरे शिष्य-प्रशिष्य तो मुझको प्रणाम करके अपने अपने घर लौट गये । मैं भी इस राष्ट्रोपनिषद् को रच कर राष्ट्र को अर्पित कर रहा हूँ।

Assuring them in this way, my disciples and their disciples greeted me and then returned to their homes. I also dedicate this creation Rashtropanishad to my country.

स्वस्त्यलमस्तु राष्ट्राय, स्वस्ति तद् ददातु सर्वथाऽस्मभ्यमपि च ।
इति मिथो भावयन्तः, श्रेयस्तु परं प्राप्नुयाम नित्यमेव ।। 100।।

राष्ट्र के लिये पर्याप्त स्वस्ति हो और वह राष्ट्र हमको भी सर्वथा स्वस्ति दे। इस प्रकार की परस्पर भावना रखते हुए हम नित्य ही परमश्रेय को प्राप्त करें ।

Let our country prosper and let us always prosper through her. With this mutual feeling, let us achieve the highest prosperity.

।। इति राष्ट्रोपनिषद् - प्रस्तावना- शतकं सम्पूर्णम् ।।